[redacted]

राज० की चित्रकला

- राज० चित्रकला का विधिवत विकास 1500 ई० से होता है.
- राज० चित्रकला में जैन शैली, गुजरात शैली, मुगल शैली, तथा अपभ्रंश शैली का प्रभाव दिखाई देती है.

नामकरण

1. आनंद कुमार स्वामी :- राज० चित्रकला का वैज्ञानिक विभाजन सर्वप्रथम "आनंद कुमार स्वामी" ने किया

   Book → राजपूत पेंटीग्स (Raj Put Paintings)

   1916 ई० में समर्थन → O.C. गांगुली, हैवेल

2. W.H. ब्राउन :-

   - इन्होने अपनी Book "Indian Paintings" में राज० चित्रकला को "Raj Put Art" कहा

3. H.C. मेहता :-

   - इन्होने अपनी Book "study in Indian Painti[ngs]" में "Hindu Kala" कहा

4. राय कृष्ण दास :-

   - इन्होने अपनी Book "भारत की चित्रकला" में "राजस्थानी चित्रकला" कहा -

   * प्रथम बार राजस्थानी चित्रकला "राय कृष्ण दास" ने कहा था.

राज० चित्रकला का वर्गीकरण :-

(i) मेवाड़ :- चावण्ड/उदयपुर, नाथद्वारा, देवगढ़

(ii) मारवाड़ :- जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नागौर, जैसलमेर, अजमेर

(iii) ढूंढाण :- आमेर/जयपुर, अलवर, शेखावटी, उनियारा.

(iv) हाड़ौती :- बूंदी, कोटा, झालावाड़

Scanned with CamScanner

- राज० के प्राचीन चित्रित ग्रंथ "जैन भद्रसूरी भण्डार", जैसलमेर में रखे हुए है.

(i) ओघ निर्युक्ति वृत्ति

(ii) दस वैकालिका सूत्र चूर्णी

1. मेवाड़ चित्रकला :

प्राचीन ग्रंथ :-

- 1260 ई० में "रावल तेज सिंह" के काल में
  "श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी"
- 1423 ई० में "मोकल" के काल में, देलवाड़ा, (सिरोही)
  "सुपार्श्वनाथ चरित्र"

- मेवाड़ शैली राज० में चित्रकला का उद्भव माना जाता है.
- मेवाड़ शैली में अजन्ता शैली का प्रभाव दिखाई देता है.

(A). चावण्ड/उदयपुर शैली :-

- चावण्ड से मेवाड़ चित्रकला का विकास प्रारम्भ होता है.

(i) महाराणा प्रताप :-

- इनके समय में 1592 ई० में "ढोला-मारू" के चित्र का चित्रण किया गया था
- मुख्य चित्रकार ⇒ "नासिरुद्दीन"

(ii) अमर सिंह :-

- इनके समय में नासिरुद्दीन ने 1605 ई० "रागमाला" का चित्रण
- "बारहमासा" का चित्रण

(iii) जगत सिंह :-

- 1615 ई० मे मुगल-मेवाड़ संधि
- इनके काल को मेवाड़ चित्रकला का "स्वर्ण युग" कहा जाता है.
- इन्होने उदयपुर मे चित्रशाला का निर्माण करवाया
- इसे "चितेरो-री-ओबरी" तथा "तस्वीरा-रो-कारखानो" कहा जाता था
- मुख्य चित्रकार – (i) साहबदीन < राजाओं के चित्र रागमाला
  (ii) मनोहर.

Scanned with CamScanner

(iv) संग्राम सिंह II :-

- इनके समय के दो प्रमुख विषयों पर चित्रण
  - (i) कलीला दमना → पंचतंत्र का अरबी → "विष्णु शर्मा"
  - (ii) मुल्ला दो प्याज़ा के लतीफे

विशेषताएं :-

(i) राजस्थानी चित्रकला का उद्भव

(ii) शिकार के चित्रों में 3D प्रभाव

(iii) महिलाओं की आँखें "मीनाकृति" की

(iv) पुरुष कमकद के व पगड़ी व मूंछें

(v) कदम्ब के वृक्ष का मुख्य रूप से चित्रण

(vi) मुख्य रंग → लाल, पिले, हरे, सफेद,

मुख्य चित्रकार :-

- * नानाराम → 1540ई० मे "पारिजात अवतरण" का चित्रण
  ↳ उदय सिंह के काल में
- * नुरुद्दीन → जगत सिंह II का चित्र
  गंगाराम, कृपाराम, जगन्नाथ, मनोहर.
- * नासिरुद्दीन → रागमाला [अमर सिंह के काल]- 1605ई०
  (ई०)
- * साहिबदीन → रागमाला / → व्यक्तिगत चित्रण

[B] नाथद्वारा शैली :-

- वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव
- मेवाड़ व ब्रजशैली का मिश्रण
- कृष्ण लीलाओं का कपड़े पर चित्रण ⇒ पिछवाईयाँ
- "भगवान कृष्ण" का अधिक चित्रण
- गायों, कदली (केले) का चित्रण
- आसमान मे देवताओं का चित्रण
- प्रमुख रंग → हरा एवं पिला

Scanned with CamScanner

प्रमुख चित्रकार :-

बाबा रामचन्द्र   चम्पाराम   कमला] "महिला चित्रकार"
नारायण   धासीराम   इलायची
चतुर्भुज   उदयराम
रामलिंग

[C]. देवगढ़ शैली :-

- मेवाड़ में 16 प्रथम श्रेणी ठिकाने थे
- देवगढ़ मेवाड़ का 16 वाँ ठिकाना था
- यहाँ के सामन्त "16वें उमराव" कहलाते थे
- प्रारम्भ में इसे मेवाड़ शैली में ही माना जाता था
- देवगढ़ चित्रकला को "श्रीधर अंधारे" को प्रकाश में लाए थे-
- ये शैली मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाण शैली का मिश्रण है.
- यहाँ भित्ति चित्रों का चित्रण अधिक हुआ
  प्रमुख भित्ति चित्र → मोती महल, अजारा ओबरी
- प्रमुख रंग → पिला
- प्रमुख चित्रकार :-

कुंवला   बगता
चोखा   हरचंद
बैजनाथ   नगा

* ये शैली "द्वारका प्रसाद चूण्डावत" के समय प्रसीद्ध हुई-

मेवाड़ चित्रकला पर कार्य करने वाले → श्रीधर अंधारे, R.K. वशिष्ठ
डॉ० मोतीचन्द्र.

डगलास बैरेट, बैसिल गैं इनके अनुसार "चोरपचाशिका" चित्र शैली मेवाड़ शैली में प्रारम्भ हुई
↓
चोर व उसकी प्रेमिका.

Scanned with CamScanner